संस्कृत-भाग

यहां पर आपको शब्द- शब्द का तोड़-तोड़कर हर लाइन का अलग-अलग हिंदी अनुवाद दिया जा रहा है। महत्वपूर्ण गद्यांश/पद्यांश पृथक से एक साथ दिए जा रहे हैं। प्रत्येक पाठ के सभी श्लोक तिरछे वर्णों में छपे हैं ।

आत्मज्ञ एव सर्वज्ञः

सन्दर्भ- बृहदारण्यकोपनिषद् से उद्धृत यह गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक के संस्कृत-भाग के 'आत्मज्ञ एव सर्वज्ञः' नामक शीर्षक से लिया गया है।

www.gyansindhuclasses.com

- **याज्ञवल्क्यो मैत्रेयीमुवाच-**
  याज्ञवल्क्य मैत्रेयी से बोले-
- **मैत्रेयि! उद्यास्यन् अहम् अस्मात् स्थानादस्मि।**
  मैत्रेयि! मैं इस स्थान (गृहस्थाश्रम) से ऊपर जा रहा हूं।
- **ततस्तेऽनया कात्यायन्या विच्छेदं करवाणि इति।**
  अतः तुम्हारा इस कात्यायनी से बटवारा कर दूं।
- **मैत्रेयी उवाच-यदीयं सर्वा पृथिवी वित्तेन पूर्णा स्यात्**
  मैत्रेयी बोली- यदि यह सम्पूर्ण पृथ्वी धन से पूर्ण हो जावे
- **तत् किं तेनाहममृता स्यामिति।**
  तो क्या मैं उससे अमर हो जाऊंगी।
- **याज्ञवल्क्य उवाच-नेति।**
  याज्ञवल्क्य बोले-'नहीं'।
- **यथैवोपकरणवतां जीवनं तथैव ते जीवनं स्यात्।**
  जैसा साधन-सम्पन्न धनिकों का जीवन होता है, वैसा ही तुम्हारा भी जीवन होगा।
- **अमृतत्वस्य तु नाशास्ति वित्तेन इति।**
  धन से अमरता की तो आशा नहीं है।
- **सा मैत्रेयी उवाच- येनाहं नामृता स्याम्**
  उस मैत्रेयी ने कहा- जिस धन से मैं अमर नहीं हो सकती
- **किमहं तेन कुर्याम्।**
  उससे मैं क्या करूं?
- **यदेव भगवान् केवलममृतत्त्वसाधनं जानाति, तदेव मे ब्रूहि।**
  अतः भगवान् (आप) जो अमरता का केवल साधन जानते हैं, उसी को मुझसे कहिए।
- **याज्ञवल्क्य उवाच- प्रिया नः सती त्वं प्रियं भाषसे।**
  याज्ञवल्क्य बोले- तुम हमारी प्रिय हो, तुम प्रिय बात कह रही हो।
- **एहि, उपविश, व्याख्यास्यामि ते अमृतत्त्वसाधनम्।**
  आओ, बैठो, तुम्हारे लिए अमृत के साधन की व्याख्या करूंगा।
- **याज्ञवल्क्य उवाच- न वा अरे मैत्रेयि! पत्युः कामाय पतिः प्रियो भवति।**
  याज्ञवल्क्य बोले- अरी मैत्रेयि! पति की इच्छा पूर्ति के लिए पति प्रिय नहीं होता,
- **आत्मनस्तु वै कामाय पतिः प्रियो भवति।**
  अपनी इच्छा पूर्ति के लिए पति प्रिय होता है।
- **न वा अरे, जायायाः कामाय जाया प्रिया भवति,**
  इसी प्रकार पत्नी की कामना पूर्ति के लिए पत्नी प्रिय नहीं होती,

www.gyansindhuclasses.com

- **आत्मनस्तु वै कामाय जाया प्रिया भवति।**
  अपनी ही इच्छा पूर्ति के लिए पत्नी प्रिय होती है।
- **न वा अरे पुत्रस्य वित्तस्य च कामाय पुत्रो वित्तं वा प्रियं भवति,** अरे पुत्र अथवा धन की कामना से पुत्र या धन प्रिय नहीं होता है,
- **आत्मनस्तु वै कामाय पुत्रो वित्तं वा प्रियं भवति।**
  अपनी ही कामना पूर्ति के लिए पुत्र अथवा धन प्रिय होता है।

- **न वा अरे सर्वस्य कामाय सर्वं प्रियं भवति,**
  अरे! सभी की कामना से सभी प्रिय नहीं होते हैं,
- **आत्मनस्तु वै कामाय सर्वं प्रियं भवति।**
  अपनी ही कामना पूर्ति के लिए सब प्रिय होते हैं।
- **तस्माद् आत्मा वा अरे मैत्रेयि !**
  इसलिए हे मैत्रेयि! आत्मा ही
- **दृष्टव्यः दर्शनार्थं, श्रोतव्यः, मन्तव्यः, निदिध्यासितव्यश्च।**
  देखने योग्य, दर्शन हेतु, सुनने योग्य, मनन हेतु और ध्यान करने हेतु है।
- **आत्मनः खलु दर्शनेन इदं सर्वं विदितं भवति।**
  निश्चय ही आत्म दर्शन से यह सब ज्ञात होता है।

www.gyansindhuclasses.com

www.gyansindhuclasses.com